सुबह की संगीत सभा

विस्तार है अपार, प्रजा दोनों पार

अनिल सिंह

स्कूल का कोई भी दिन बच्चों के स्वागत से ही शुरू होता। यहाँ न तो घड़ी का काँटा बताने वाली घण्टी बजती और न दरवाज़े पर कोई दरबान होता। सुबह नौ से साढ़े-नौ के बीच स्कूल का यह आँगन बच्चों के रंग-बिरंगे फूलों से भर जाता। क्या छोटे, क्या बड़े। झूलों पर, रेत पर, क्यारियों में और पूरे प्रांगण में ये तितलियों की तरह मँडराते रहते।

स्कूल का पहला सत्र दौड़-भाग और व्यायाम का होता। हर रोज़ अपनी मरज़ी की चाल। न कोई सीटी न कोई निर्देश, बस एक-दूसरे को देखकर ही एक क्रम-सा बना लेते बच्चे। इसके बाद शुरू होती, मॉर्निंग गेदरिंग। बाहर सुबह कैसी भी हो, आनन्द निकेतन डेमोक्रेटिक स्कूल में यह संगीतमय और मस्ती भरी ही होती।

मॉर्निंग गेदरिंग: उल्लास के गीत

आँख मून्दकर, हाथ जोड़कर, यांत्रिक ढंग से ईश विनय करने और कराने में हमारी कोई दिलचस्पी नहीं रही। हमारा यह मानना रहा कि प्रार्थनाएँ, भजन और पॉपुलर गीत-कविताएँ तो समाज में और परिवार में बिखरे पड़े हैं। ये तो बच्चों को सुनने-सुनाने को मिल ही जाते हैं, लेकिन स्कूल में तो हमें वह खज़ाना संजोना चाहिए जो बच्चों को अलग अनुभव दे सके। परम्परागत गीत हमारी धरोहर हैं लेकिन वे सब उपयुक्त हैं और संजोने लायक हैं, ऐसा ज़रूरी नहीं। उनमें भी अक्सर बहुत सारी जड़ता, भेदभाव, रूढ़ियों का पोषण और प्रतिगामी मूल्य पाए जाते हैं।

इसलिए बच्चों के रंग में रंगे और प्रेम, उल्लास व हास-परिहास में पगे, न्याय, बराबरी और साथियापा के मूल्यों वाले गीत हमने चुने। कुछ बच्चों ने भी सुझाए। विविध भावों में पिरोये, विविध भाषाओं और अंचलों के इन गीतों ने बच्चों के एहसास को विस्तार दिया। हिन्दी समेत पहाड़ी, छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी, बांग्ला, झारखण्डी, तमिल और अँग्रेज़ी के ये गीत, बच्चों के लिए दुनिया की किसी रंगीन तस्वीर से कम नहीं। इन गीतों में प्रकृति के लिए अनुराग है, नदियों, पहाड़ों और पंछियों से संवाद है, मस्ती और खेल है, दोस्ती है, न्याय है, बराबरी है और हँसी-ठिठोली भी। कोई रंग नहीं जो फीका हो। गीतों की सुरीली तान पर डफली और ढोलक की ताल। ऐसी सुबह के क्या कहने। और वो भी हर रोज़।

इस मॉर्निंग गैदरिंग ने पूरे दिन को लयात्मक, ऊर्जावान और साथीपन से भरा बनाए रखने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई। अलग-अलग सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चे जब समवेत स्वर में गीत गाते तो उनके बीच एक बॉण्डिंग बनती। यह बॉण्डिंग स्कूल में पूरे समय बनी रहती। बच्चे कई बार गीतों के ज़रिए एक-दूसरे से जुड़ पाते। अलग-अलग भाषा, बोली और परिवेश के गीत बच्चों के मन में जाने-अनजाने, समाज के व्यापक ताने-बाने को समझने और उसे स्वीकारने की ज़मीन तैयार करते।

गीतों का खज़ाना

इन विविधता भरे गीतों के संकलन की भी ज़बरदस्त कहानी है। स्कूल में अलग-अलग समय शिक्षार्थी, शोधार्थी, विज़िटर, वॉलंटियर और अलग-अलग महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों से इंटर्न आते। जब भी स्कूल में कोई आता, हम उसे मॉर्निंग गैदरिंग में शामिल होने के लिए ज़रूर कहते। हम उनसे भी आग्रह करते कि वे भी कोई गीत या कविता साझा करें। इस तरह वह कविता या गीत भी हमारे खज़ाने में जुड़ जाता। इसके अलावा बच्चे, शिक्षक और अभिभावक भी नए-नए गीत हमारे इस खज़ाने में जोड़ते चले जाते।

फोटो: विजय झोपाटे

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी में एजुकेशन की विद्यार्थी शीतल पॉल जब अपने असाइनमेंट के लिए स्कूल में रहीं तो बच्चों से उनकी अच्छी दोस्ती बनी और उन्होंने बच्चों को कई गीत सिखाए। इनमें से एक गीत बच्चों के लिए उन दिनों का सबसे पसन्दीदा गीत बना। 'कौवों की काएँ-काएँ, चिड़ियों का हल्ला, सुबह-सुबह जाग गया सारा मुहल्ला'। यह गीत स्कूल से निकलकर फिर कई जगह पहुँचा।

एक समय पर शोभा नागराजन बच्चों को इंग्लिश पढ़ाने के लिए कुछ समय के लिए स्कूल से जुड़ीं। शोभाजी तमिल भाषी थीं। उन्होंने *रोजा* फिल्म का मशहूर गीत 'दिल है छोटा-सा, छोटी-सी आशा' का तमिल भाषान्तरण बच्चों को सिखाया। 'चिन्नच् चिन्न आसै सिरगडिक्कुम् आसै - मुत्तु मुत्तु आसै, मुडिन्दु वैत्त आसै...'। बच्चों ने न सिर्फ कुछ दिन लगाकर इसको अच्छी तरह से सीखा बल्कि कई मौकों पर लोगों के सामने इसकी प्रस्तुति भी दी। और इस तरह हमारे गीतों के खज़ाने में एक तमिल गीत की एण्ट्री हो गई।

स्कूल कैंपस का प्रबन्धन करने वाले और बच्चों के साथ मेंटल मैथ व मैदानी खेल गतिविधियाँ करने वाले उत्साही शिक्षक साथी और बच्चों के विजय चाचू ने इन मॉर्निंग गैदरिंग का

उत्साह और इसकी तासीर कभी कमज़ोर नहीं पड़ने दी। डफली के साथ ऊँचे-से-ऊँचा स्वर लगाने में विजय ने कभी कोई कसर नहीं छोड़ी। बच्चों जैसी सुलभता और हास-परिहास के धनी विजय इस मॉर्निंग गैदरिंग में जान डाल देते थे। *एकलव्य* में काम करने के दौरान सीखे गीत और कविताएँ उन्होंने बच्चों को सिखाए। 'चूहों म्याऊँ सो रही है', 'मालती के बच्चे को सर्दी लग गई', 'पहाड़ी पर पेड़ था', 'एक कोई कस्बा था', 'राजा की रानी की वाह भई वाह'... वगैरह-वगैरह। 'पहाड़ी पर पेड़ था', 'एक कोई कस्बा था' और 'राजा की रानी की वाह भई वाह' – ये तीनों ऐसी कविताएँ हैं जिनमें एक के बाद एक लाइनें जुड़ती जाती हैं। आगे गाने वाला पिछली लाइनों को भी जोड़ता जाता है। बाकी सबको शुरू से अब तक की कविता दुहरानी होती है। इस तरह इसकी पूँछ बढ़ती जाती है। यह बड़ा मज़ेदार होता है।

इस संकलन को समृद्ध बनाने में बहुतेरों का योगदान रहा है। अभिभावकों ने भी इस संकलन में गीत जोड़े। वे अपनी संस्कृति और संगीत को स्कूल में लेकर आए। स्कूल में शुरुआत से ही जुड़ने वाली अबीर की माँ, कविता बिष्ट, कुमाऊँ क्षेत्र से हैं, अल्मोड़ा ज़िले से। उन्होंने बच्चों को कई कुमाऊँनी गीत सिखाए। उनमें से 'रंग रंगीलो मेरो ये प्यारो नैनीताला' बच्चों का पसन्दीदा गीत बन गया। इसके अलावा 'ततुक नी लगा उदेख, घुनन मुनइ नि टेक जैता एक दिन तो आलो उ दिन यो दुनी में', और 'बेडू पाको बारमासा...' भी बच्चों ने मज़े-मज़े में सीख लिए। कविता ने जब 'ततुक नी लगा उदेख...' गीत का अर्थ समझाया तो लगा कि यह तो 'वह सुबह कभी तो आएगी' गीत में कही गई बात जैसा ही है। इससे गीतों का मज़ा कई गुना बढ़ गया।

अम्बर स्कूल के शुरुआती दिनों से जुड़े बच्चों में से एक है। अम्बर के अभिभावक टुलटुल और राजेश स्कूल की संकल्पना के दिनों से हमारे साथी रहे हैं। टुलटुल बांग्ला भाषी हैं। उन्होंने हमारे खज़ाने में कई बांग्ला गीत जोड़े। उनमें से दो गीत तो बच्चों ने बांग्ला में सीख ही लिए थे। पहला रवीन्द्रनाथ टैगोर का लिखा हुआ 'आज धानेर खेते रौद्र छाया, लूकू चूरी खेला...' और दूसरा जसमी उद्दीन का लिखा हुआ भटियाली गीत, 'अमाये दूबाइली रे, आमाये भाषाईली रे, ओकुल दोरीयार बूझी, कूल नाई रे...'। 'अमाये दूबाइली रे...' गीत की धुन का हिन्दी गीत भी साथ-साथ ही गाया जाता रहा – 'गंगा आए कहाँ से, गंगा जाए कहाँ रे, लहराए पानी में जैसे धूप-छाँव रे'। इसमें हम लोगों ने एक अनूठा प्रयोग किया। एक लाइन बांग्ला और एक लाइन हिन्दी करके गाने में, इसका

जादू ही कुछ और स्तर पर होता।

छह साल का समर कुछ दिनों के लिए स्कूल में आया। पहले तो वह समर कैंप से जुड़ा लेकिन सत्र शुरू होने पर नियमित स्कूल आने लगा। उसकी माँ स्तुति ने मॉर्निंग गैदरिंग में एक लोक शैली का गीत जोड़ा – 'हाय कसम बाजरा, मेरी कसम बाजरा'। उन्होंने बच्चों को इस गीत का अभिनय करना भी सिखाया। बच्चों ने इस गीत में खूब मज़े किए। स्तुति खुद इस गीत को इतने आनन्द से गाती कि बच्चों को इसे सीखने में बड़ी आसानी और उत्साह रहा।

छोटे बच्चों के साथ मॉण्टेसरी किट पर समय बिताने वाली नमिता भगत (छोटी) ने छत्तीसगढ़ी की क्षेत्रीय बोली 'सादरी' में एक गीत बच्चों को सिखाया – 'इने डाला बाथेला, उने डाला बाथेला'। नमिता ने बच्चों को इसका हिन्दी मायना भी बताया। इसमें जब एक लाइन आती –'उँदरो रे उँदरो, माटी कुरई दे' तो बच्चे चूहों की तरह उछल-उछल कर मिट्टी खोदने का अभिनय करने लगते और उसमें उन्हें बहुत मज़ा आता।

गीतों में न्याय व जनपक्षधरता

संगीत और सामाजिक विज्ञान की शिक्षक और इस मॉर्निंग गैदरिंग एवं स्कूल की मज़बूत स्तम्भ वर्षाजी ने बच्चों को कई सारे गीत सिखाए। वर्षाजी सामाजिक आन्दोलनों से लम्बे समय तक जुड़ी रहीं और महिला अधिकारों व नागरिक अधिकारों के संघर्ष की साथी रही हैं। जब ऐसा शिक्षक स्कूल में होता है तो स्कूल की प्रक्रियाओं में, शिक्षण की विषयवस्तु में और पूरे माहौल पर उसका प्रभाव पड़ता है। उनकी दृष्टि से चुने हुए गीतों ने हमारे संकलन को जनपक्षधरता, न्याय और बराबरी वाले मूल्यों की ज़मीन पर खड़ा किया। और इस तरह किसानों, मज़दूरों, आदिवासियों और हाशियाकृत लोगों की आवाज़ बुलन्द करने वाले गीत हमारे संकलन में जुड़े। 'गाँव छोड़ब नाहीं, जंगल छोड़ब नाहीं', 'गुलमिया अब हम नाहीं बजइबो', 'अज़दिया हमरा के भावेले' और मार्टिन लूथर किंग का कालजयी गीत 'हम होंगे कामयाब'। इसके अलावा 'दरिया की कसम, मौजों की कसम, ये ताना-बना बदलेगा' जैसे गीतों ने इन जज़्बों को एक विस्तृत फलक दिया।

वर्षाजी स्कूल में छोटे और बड़े, सभी बच्चों की नियमित संगीत कक्षा करती थीं। इन कक्षाओं में बच्चे मॉर्निंग गैदरिंग में गाए जाने वाले गीतों के अलावा स्वरों और अलंकारों का भी अभ्यास करते थे। ठुमरी, दादरा, गज़ल, सूफी गायन – सब कुछ बच्चों ने इन कक्षाओं में खँगाला। एक भोजपुरी गीत 'ए हो! का हो! गाजर शकरकन्द चले नी न्योते में' गीत बच्चों के बीच सबसे ज़्यादा

पसन्द किया गया। अवधी का एक लोकगीत भी बच्चों ने उनके साथ सीखा – 'पिया मेहन्दी ले यादा मोती झील से, जाके साइकील से ना'। वर्षाजी द्वारा सिखाया और तैयार कराया कजरी शैली का एक गीत 'सरसों फूल रही खेतन में...' बच्चों ने कई जगह प्रस्तुत भी किया। हारमोनियम और डफली की संगत ने उनमें संगीत का संस्कार डालने में बहुत मदद की।

वर्षाजी ने ही अमेरिकन प्रतिरोध के गीतकार बॉब डिलेन के गीत 'how many roads must a man walk down, before he called him a man' से हमारा परिचय कराया। इस गीत को गाते समय कभी ऐसा न हुआ होगा जब हमारे रोंगटे न खड़े हो गए हों। और बच्चे क्या तान के साथ इसे गाते रहे हैं। इस गीत ने बच्चों के साथ हम बड़ों को भी एक नया अनुभव दिया।

हमने फिल्मों से भी कुछ सुन्दर-सुन्दर गीत लिए। जैसे 'अपने लिए जिए तो क्या जिए', 'किसी की मुस्कराहटों पे हो निसार', 'मधुबन खुशबू देता है', 'इक दिन बिक जाएगा माटी के मोल', 'हरी-हरी वसुन्धरा पे नीला नीला ये गगन' आदि। इसके अलावा गोरख पाण्डे का 'हिलेले झकझोर दुनिया', बल्ली सिंह चीमा का 'ले मशालें चल पड़े हैं लोग मेरे गाँव के' और दुष्यन्त कुमार के

कालजयी गीत 'फिर धीरे-धीरे यहाँ का मौसम बदलने लगा है', और 'हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए'। इसके अलावा अदम गोंडवी का 'सौ में सत्तर आदमी फिलहाल जब नाशाद हैं', या 'गीत गा रहे हैं हम रोशनी को ढूँढते हुए', इपटा का गीत 'तू ज़िन्दा है तो ज़िन्दगी की जीत पर यकीन कर' को भी हमने अपने गीतों के खज़ाने में जोड़ लिया।

गीत के साथ संवाद

नरेन्द्र शर्मा द्वारा लिखा और भूपेन हज़ारिका द्वारा गाया एक हिन्दी गीत का किस्सा तो कमाल का रहा। एक बार हमने गीत 'विस्तार है अपार, प्रजा दोनों पार, करे हाहाकार...' बच्चों के बीच सुनाया। बच्चे भी साथ-साथ गाने लगे और उन्हें यह गीत मोटे तौर पर याद भी हो गया। वे इसके शब्दों को पूरी तरह समझ नहीं रहे थे लेकिन सुन-सुनकर वैसा-का-वैसा बोलने लगे थे। एक बार सुबह की संगीत सभा में जब हमने यह गीत गाया तो उसके ठीक बाद आठ साल की जन्नत ने पूछा, "यह कौन बोल रहा है कि 'गंगा तुम बहती हो क्यों'?" हम सब सोचने लगे कि इसका क्या जवाब होगा। हमने उस समय तो सिर्फ इतना कहा कि "जिसने यह गीत लिखा है, वही बोल रहा है 'गंगा तुम बहती हो क्यों'।" लेकिन यह बात हम सबके साथ रही आई और हम सोचते रहे कि जब तक गीतों का सन्दर्भ न खुले और वह पूरी तरह से समझ में न आए, तब सिर्फ गीत याद हो जाने को हम क्या मानें?

हमने तय किया कि इस गीत के शब्दों और कहन पर हम बात करेंगे। जैसे हम पाठ्यपुस्तक के पाठों और कविताओं पर बात करते हैं ताकि वे पूरी तरह से समझ में आ सकें तो फिर गानों के साथ हम ऐसा क्यूँ सोचते हैं कि सिर्फ याद हो जाने या धुन पकड़ लेने से ही काम पूरा हो गया? अगले दिन, सुबह की संगीत सभा में हमने एक-दो शुरुआती गीत गाने के बाद, भूपेन हज़ारिका के गाए इसी गीत को लिया। एक-एक लाइन को गाने और बच्चों द्वारा दुहराने के साथ-साथ ही हम उसमें कही गई बात पर थोड़ी-थोड़ी चर्चा करके, उसका पूरा सन्दर्भ और अर्थ खोलते गए। किसके विस्तार की बात हो रही है? प्रजा कौन है? हाहाकार कब और क्यों होता है? निशब्द होने का क्या मतलब है?

अब हमने देखा कि बच्चे कुछ ज़्यादा ही रुचि और जोश के साथ इस गीत को गा रहे थे। गंगा के दोनों विस्तृत किनारों पर, इस पार और उस पार रहने वाले लोग दुख और तकलीफों में हैं, उनमें हाहाकार मचा हुआ है और वे बदहाली में मदद के लिए पुकार रहे हैं। ऐसे में गंगा सिर्फ बहती रहे? वह गंगा जो सदियों से हमारी आस्था का प्रतीक है, हमारे

उद्धार का प्रतीक है। इतनी बड़ी, विशालकाय और पौराणिक महत्व की नदी जिसके पानी में प्रकृति को हरा-भरा व खुशहाल बनाने की तासीर है, वह हमारी बदहाली को चुपचाप बहते हुए देखती रहे। यह शिकायत है एक आम आदमी की, और उसकी तरफ से यह बात इस गीत का लेखक गंगा से कह रहा है।

इसी तरह आगे की सभी पंक्तियों पर हम रुक-रुककर और बच्चों से पूछते एवं बतियाते हुए गीत के शब्दों और उनमें कही गई बातों का सन्दर्भ खोलते गए। यह हमारे लिए भी एकदम नया अनुभव था। लेकिन इससे हमें एक बात समझ में आई कि गीतों को सिर्फ गाए जाने वाली चीज़ समझना कितनी बड़ी भूल है। ये मानकर कि आगे जाकर बच्चे खुद इन गीतों को समझ लेंगे, बच्चों को हम उनके पूरे सन्दर्भ और अर्थ से आज वंचित नहीं रख सकते। इससे न सिर्फ गीत का सौन्दर्य मारा जाता है बल्कि बच्चे गीत के साथ जुड़ाव भी नहीं बना पाते। एक यांत्रिक रिश्ता भर रह जाता है।

इसके बाद कई रोज़ तक सुबह की संगीत सभा में हम नियमित रूप से इस गीत को गाते रहे। हमने देखा कि इस गीत में लगातार निखार और जीवन्तता आती गई। इसे हमने बच्चों के साथ कई मंचों पर सामूहिक रूप

से गाया। भोपाल गैस त्रासदी की बरसी पर साथी संगठनों के साथ मिलकर भी हम इस गीत को गाते रहे हैं। इसके अलावा, स्कूल के सालाना जलसे में, किसी विज़िटर ग्रुप के आने पर या शहर की अन्य संस्थाओं द्वारा आमंत्रित किए जाने पर बच्चों ने यह गीत ज़रूर सुनाया। हर बार उनके तेवर और तान में एक पायदान की ऊँचाई ही देखने को मिली। गीत को जान लेने के बाद, उसके गाए जाने में अलग ही मज़ा था।

एक बार भोपाल स्थित भारत भवन की कला विथिका में चित्रकार और कवि तेजी ग्रोवर के चित्रों की प्रदर्शिनी लगी थी। हम बच्चों को लेकर भारत भवन के भ्रमण पर थे। पेंटिंग्स देखने कला विथिका भी गए। उस वक्त वहाँ तेजी ग्रोवर भी थीं। हमें पता चला कि आज उनका जन्मदिन है। हमने बच्चों के साथ मिलकर वहीं कला विथिका में एक गीत जो उन दिनों हम सबसे ज़्यादा गा रहे थे, प्रस्तुत किया। गीत था 'ये कौन चित्रकार है'। तेजीजी ने भावुक होते हुए कहा कि इतना सुन्दर उपहार उन्हें कभी नहीं मिला।

शिक्षा में संगीत का अभिन्न स्थान

स्कूल में संगीत का बसा होना, इस बात की पहचान बना कि हम स्कूल और पढ़ाई-लिखाई को किस तरह देखते हैं। गणतंत्र दिवस हो, स्वतंत्रता दिवस हो, समर कैंप हो, किन्हीं विज़टर का स्वागत हो या किसी मीटिंग का आगाज़ हो – गीत-संगीत के बिना यह कभी पूरा न हुआ। स्कूल में सिर्फ पढ़ाई-लिखाई होगी और संगीत के लिए कहीं और जाना होगा, यह न स्कूल के लिए ठीक है न बच्चों के लिए।

बच्चों के शुरुआती समूह को इसका सबसे लम्बा अनुभव मिला। वे इस मॉर्निंग गैदरिंग के आकार लेने के साक्षी रहे हैं। इस मॉर्निंग गैदरिंग में उनकी भागीदारी और संगीत की कक्षाओं का ही असर कहें कि आज भी वे बच्चे किसी-न-किसी तरह संगीत से जुड़े हुए हैं। संगीत का यह रस बच्चों और बड़ों में एक-सा असर रखता है। जो एक बार इस मॉर्निंग गैदरिंग में शामिल हुआ वो फिर इसे कभी भुला न पाया।

अनिल सिंह: पिछले 25 वर्षों से सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय हैं। विगत डेढ़ दशक से प्राथमिक शिक्षा उनका प्रमुख कार्य रहा है। भोपाल के आनंद निकेतन डेमोक्रेटिक स्कूल की संकल्पना के दिनों से वे जुड़े रहे और उसका संचालन किया। वर्तमान में, टाटा ट्रस्ट के पराग इनिशिएटिव से जुड़कर बाल साहित्य और पुस्तकालय संवर्धन का काम कर रहे हैं।

सभी फोटो: अनिल सिंह।